चतुर्थ दिवस

- जनवकालत की रणनीतियाँ
- भूमिकाओं, संदेशों एवं गतिविधियों का चुनाव
- समय सीमा, बजट एवं अनुश्रवण
- *बाटम लाईन* रणनीतियाँ

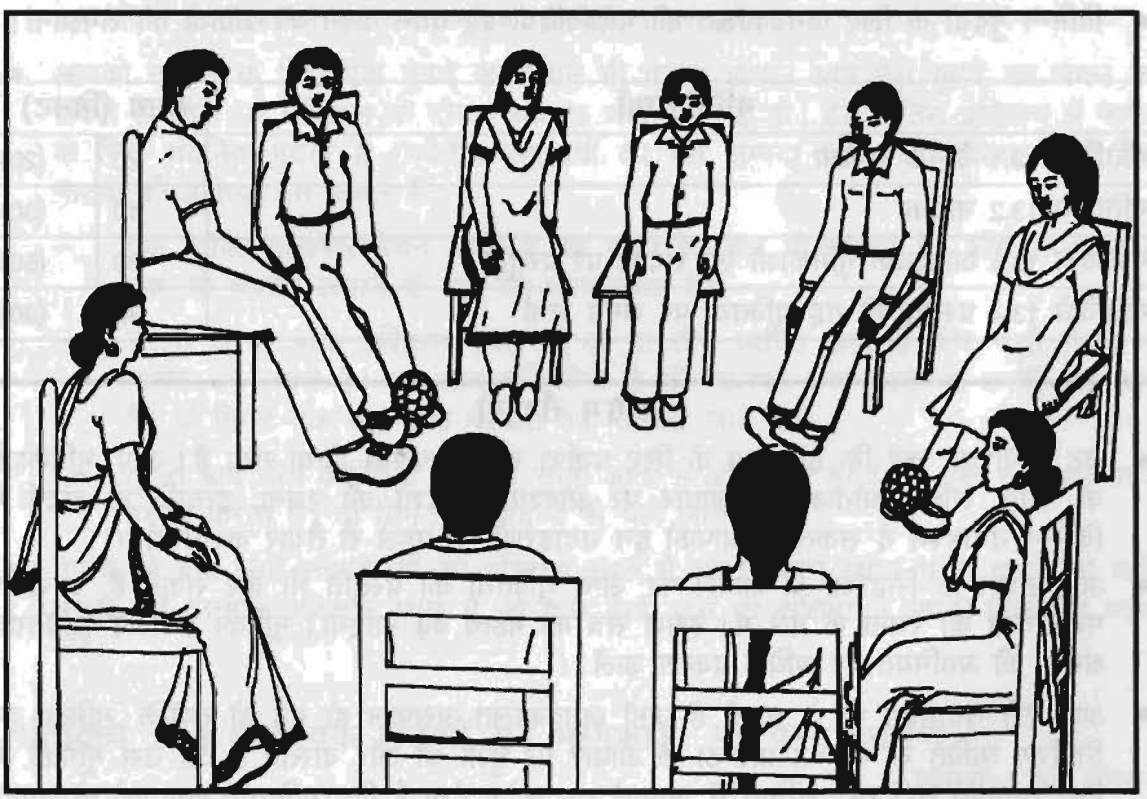

सत्र 13
जनवकालत के चरण–जनवकालत की रणनीतियों का निर्धारणः भूमिकायें, आवश्यक संदेश एवं गतिविधियाँ

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

लोगों की भूमिका, आवश्यक संदेश एवं गतिविधियों के संदर्भ में जनवकालत की रणनीतियों को चयनित करने की प्रक्रिया से परिचित होना।

सत्र के विशेष उद्देश्य

- जनवकालत के प्रयासों में विभिन्न व्यक्तियों की भूमिका निर्धारण करने की प्रक्रिया को समझाना
- जनवकालत के लिए आवश्यक संदेशों की रचना करते समय ध्यान रखने योग्य घटकों की पहचान
- विभिन्न मुददों के लिए जनवकालत की गतिविधियों का चयन करने की प्रक्रिया को समझाना।

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 13.1 दैनिक समीक्षा	20	(20)
गतिविधि 13.2 नाटक	10	(30)
गतिविधि 13.3 आवश्यक भूमिकाओं एवं संदेशों पर प्रस्तुति	30	(60)
गतिविधि 13.4 प्रस्तुत की गई युक्तियों पर समग्र चर्चा	30	(90)

अग्रिम तैयारी

- यह सुनिश्चित करें कि इस सत्र के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध किया गया हैं। आप, भूमिकाओं के चयन, लक्षित श्रोताओं के आधार पर आवश्यक संदेशों की रचना, इत्यादि के संदर्भ में विभिन्न उदाहरण दे सकते हैं, आपको इन उदाहरणों को पहले से तैयार करना होगा।
- आप संचार के सिद्धान्तों के आधार पर, अन्य युक्तियों की प्रस्तुति भी कर सकते हैं, खासतौर पर संदेशों की रचना के बारे में। इससे सत्र का महत्व बढ़ जाएगा। भूमिका के लिए व्यक्तिगत क्षमता की अहमियत पर अधिक प्रकाश डालें।
- आप ऐसे उदाहरण भी दे सकते हैं जहाँ जनवकालत असफल हो गई हो क्योंकि, भूमिका का निर्धारण व्यक्ति के पद या प्रतिष्ठा के आधार पर हुआ था और वास्तव में वह उस भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं था। संक्षिप्त में, आपको यह संदेश देना है कि व्यक्तिगत क्षमताओ के आधार पर ही भूमिका का निर्धारण करना चाहिए।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 13.1 जनवकालत के नियोजन की रूपरेखा हेतु क्रमबद्ध चरण

अन्य सामग्री

सुगमकर्ताओं के लिए सुझाव–13

गतिविधि 13.1 दैनिक समीक्षा

समय : 20 मिनट

दैनिक समीक्षा के लिए आप अपने तरीकों का प्रयोग कर सकते हैं। (मदद् के लिए सं.सा. 4.1 देखें)

गतिविधि 13.2 नाटक

समय : 10 मिनट

- इस सत्र का प्रारम्भ एक ही मुददे पर विभिन्न प्रकार के नाटकों के द्वारा करें। इस नाटक के लिए आपको 7 सहभागियों की आवश्यकता होगी। सहभागियों का चयन उनकी क्षमताओं के आधार पर करें (आदर्श तो यह होगा कि उनका चयन एक दिन पहले किया जाए) और उनको अपनी–अपनी भूमिकाओं के बारे में ध्यान से समझाएं। यदि जरूरत हो तो तैयारी करने में आप भी उनकी सहायता करें। इस नाटक के लिए वह विभिन्न प्रकार की पोशाकों का उपयोग भी कर सकते हैं। पोशाकों का चयन भूमिका के आधार पर करें।
- आपको नाटक के लिए एक मुददे का चयन भी करना होगा। आप ऐसे मुददे का चयन कर सकते हैं जिस पर प्रशिक्षण के दौरान व्यापक चर्चा की गई हो। इस क्षेत्रिय प्रशिक्षण में नाटक के लिए चयनित मुददा है "पर्वतीय समुदायों का वन सम्पदा पर कोई अधिकार नहीं है।" नाटक की प्रक्रिया इस प्रकार है :
  - एक व्यक्ति अखबार बेचने आता है वह मुख्य समाचार भी बताता है। प्रशिक्षण स्थल के एक–दो चक्कर लगाने के बाद वह चला जाता है।
  - उसके तुरन्त बाद, प्रशिक्षण स्थल में दो या तीन व्यक्ति आते हैं और उसी मुददे पर भाषण देने लगते हैं। यह लोग बुद्धिजीवी हैं और उनको उस मुददे पर काफी जानकारी है। दो मिनट तक बोलने के पश्चात वह भी चले जाते हैं।
  - तुरन्त बाद तीन व्यक्तियो का एक समुह आता है और इसी मुददे पर एक नुक्कड–नाटक प्रस्तुत करता है। दो मिनट के बाद वें भी चले जाते हैं।
- नाटक के बाद सभी सहभागियों को प्रशिक्षण स्थल में अपने–अपने स्थान ग्रहण करने को कहें। उनसे कहें उन्होंने प्रशिक्षण स्थल में जो कुछ देखा उस पर संक्षिप्त में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें।

गतिविधि 13.3 आवश्यक संदेशों एवं भूमिकाओं पर प्रस्तुतिकरण

समय : 30 मिनट

- जनवकालत के नियोजन की रूपरेखा (सं. सा. 13.1) के बाकी भाग भी प्रस्तुत करें। इस प्रस्तुतिकरण के दौरान जल्दबाजी न करें। यदि सहभागी चाहें तो आप प्रस्तुतिकरण को रोक कर चर्चा भी कर सकते हैं, विशेषकर उदाहरणों से पहले और बाद में। इस प्रस्तुतिकरण में एक ही उदाहरण शामिल है, यदि आप चाहें तो अपने अनुभवों के आधार पर और उदाहरण भी दे सकते हैं।

गतिविधि 13.4 प्रस्तुत की गई युक्तियों पर समग्र चर्चा

समय : 30 मिनट

- प्रस्तुतिकरण के समापन के बाद सामूहिक चर्चा करें, आप इस चर्चा की शुरूवात निम्न सवाल पूछ कर भी कर सकते हैं :
  - क्या, अपने–अपने संदर्भो में, जनवकालत की तैयारी करते समय हम भी यही कदम उठाते हैं?
  - क्या होगा यदि हम सभी श्रोताओं के अनुकूल संदेश बनाने में नाकाम रहते हैं? क्या होगा यदि हम निपुणताओं और भूमिकाओं पर ध्यान नहीं देंगे।
- आप इस चर्चा को सत्र की समय सीमा तक जारी रख सकते हैं। जो सहभागी चर्चा में भाग नहीं ले रहे हैं उनको भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें। अंत में, इस सत्र का समापन यह बताते हुए करें कि जनवकालत एक लम्बे समय तक चलने वाला मिशन है। हम यह आशा नहीं कर सकते की हम कल ही उपलब्धि हासिल कर लेंगे। इसलिए, यह जरूरी है कि जनवकालतकर्ता अपने प्रयासों में निरन्तरता बनाये रखें।

सत्र के लिए संसाधन सामग्री–13

13.1 जनवकालत के नियोजन की रूपरेखा हेतु क्रमबद्ध चरण

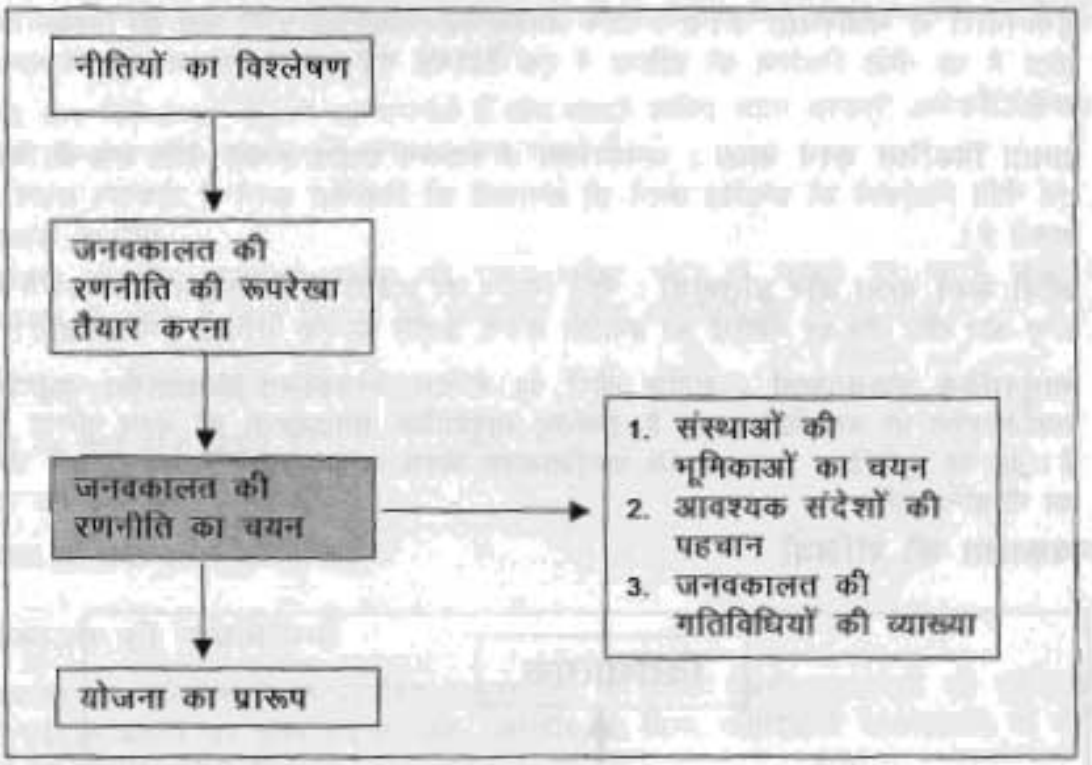

जनवकालत की रणनीतियों के निर्धारण में निम्न शामिल हैं :

- संगठनों या व्यक्तियों की भूमिकाओं का चयन– इसमें यह शामिल है कि कौन सा व्यक्ति अथवा संगठन जनवकालत के कौन से तरीके को अपनायेगा (जैसा कि नाटक में देखा गया)
- आवश्यक संदेश की पहचान– कौन सा संदेश सबसे आवश्यक है।
- जनवकालत की गतिविधियों की व्याख्या– कौन सी गतिविधि किस क्रम में की जायेगी।

जनवकालत में भूमिकाओं का चयन

जनवकालत केवल विरोधात्मक नहीं है। विरोध जताना भी जनवकालत का एक तरीका है जिसके प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है– खासतौर पर अन्त में, जब अन्य तरीके नाकाम हो जाते हैं। आमतौर पर, लोगों का यह मानना है कि अगर विरोध न जताया जाए तो जनवकालत का कोई मतलब नहीं है। मगर यह सच नहीं है। विरोधात्मक तरीकों को अपनाये बगैर ऐच्छिक बदलाव लाना तो और बेहतर जनवकालत है क्योंकि उसका तात्पर्य होगा कि हमने वाकई अपने विरोधियों का विश्वास जीत लिया है। यह ध्यान रखें कि भूमिकाओं का चयन करने के लिए आप नीति विश्लेषण से प्राप्त जानकारी का प्रयोग कर सकते हैं।

जनवकालतकर्ता निम्न चार/पांच भूमिका निभा सकते हैं:

- **विशेषज्ञ सलाहकार** : नीति निर्माताओ को तकनीकी सलाह देना जब विश्लेषण के उपरान्त उनकी जानकारी में कमियाँ दिखाई पड़ें।
- **ईमानदारी से मध्यस्थता करना** : जिन जनवकालतकर्ताओं को दोनों पक्षों का विश्वास प्राप्त होता है वह नीति निर्धारण की प्रक्रिया में एक विशेषज्ञ एवं एक मध्यस्थ के रूप में भाग ले सकते हैं।
- **क्षमता विकसित करने वाला** : जनवकालत के विभिन्न साझेदारों की, नीति सम्बन्धी निर्णयों एवं नीति निर्धारकों को प्रभावित करने की क्षमताओं को विकसित करने में योगदान प्रदान कर सकते हैं।
- **लौबी करने वाला और प्रतिभागी** : नीति निर्माण की प्रक्रिया में एक सहभागी के रूप में भाग लेना और सीधे तौर पर नीतियों को प्रभावित करना, अकेले या एक अस्थाई सम्मेलन द्वारा।
- **सामुदायिक संगठनकर्ता** : क्योंकि लोगों पर केन्द्रित जनवकालत के अन्तर्गत सामुदायिक सशक्तिकरण पर बल दिया जाता है, इसलिए सामुदायिक संगठनकर्ता की अहम भूमिका होती है। वह यह सुनिश्चित करता है कि सशक्तिकरण केवल जनवकालतकर्ता का ही नहीं जनता का भी होना चाहिए।

जनवकालत की शैलियाँ

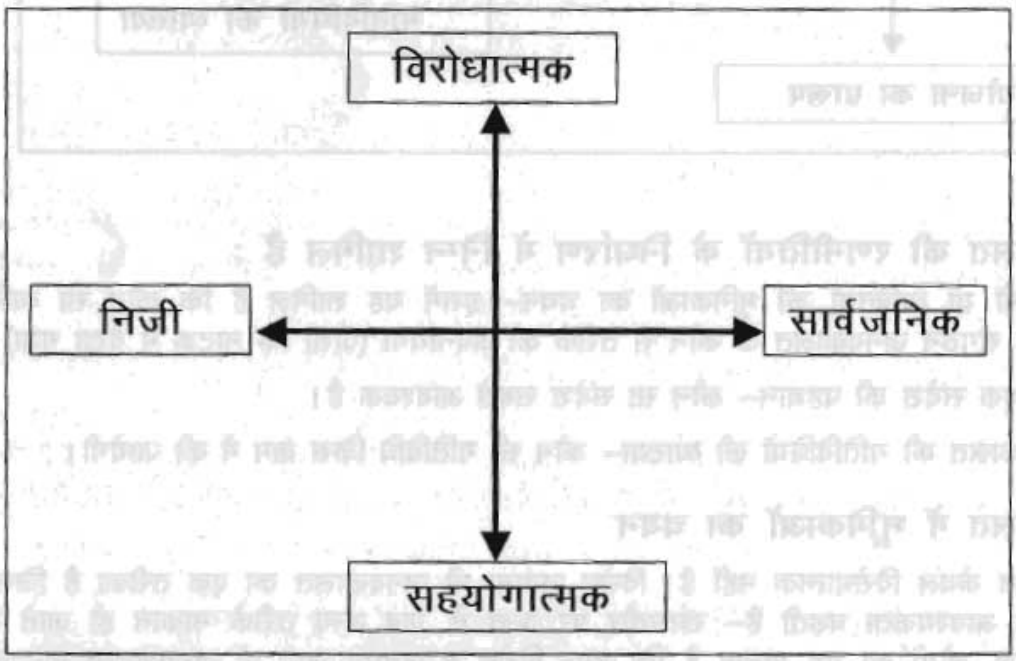

जनवकालत की भूमिकायें एवं लक्षित श्रोता

जैसा कि नाटक के तहत देखा गया, जनवकालतकर्ता की भूमिका लक्षित श्रोताओं तथा अपनाये गये जनवकालत के तरीकों पर निर्भर करती है। इस विषय में और स्पष्टता के लिए निम्न उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं :

- यदि आपके लक्षित श्रोता अधिक हैं (सामुदायिक स्तर पर), तो ऐसी स्थिति में आपकी भूमिका 'क्षमता निर्माण करने वाले की', 'जनता को संगठित करने वाले की' इत्यादि हो सकती है।

- यदि लक्षित श्रोता सम्बद्ध मंत्रालय का मंत्री है, तो आपकी भूमिका एक विशेषज्ञ सलाहकार की हो सकती है। इस भूमिका के लिए निजि या सार्वजनिक तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है।
- यदि आपने सहयोगात्मक तरीकों को अपनाया है और आपके लक्षित श्रोता व्यापारीगण हैं तो आप एक *लॉबिस्ट* की भूमिका अपना सकते हैं।
- यदि आप विरोधात्मक तरीकों को अपनाते हैं और आपके लक्षित श्रोता सरकारी अधिकारी हैं तब आप एक ईमानदार मध्यस्थ की भूमिका अपना सकते हैं।

आवश्यक संदेश

जनवकालत के लिए आवश्यक संदेश की रचना लक्षित श्रोता के आधार पर करनी चाहिए। जनवकालत के संदेश में निम्न बिन्दुओं को सम्मिलित करना आवश्यक है:

- हम क्या पाना चाहते हैं?
- हम यह क्यों पाना चाहते हैं?
- हम यह कैसे पाना चाहते हैं?
- श्रोता को क्या कदम उठाने चाहिए?

जनवकालत की गतिविधियाँ

जनवकालत की गतिविधियों का निर्धारण जनवकालत के तरीकों, जनवकालतकर्ता की भूमिकाओं और मुद्दे के आधार पर होता है। हालांकि, आमतौर पर निम्न गतिविधियाँ जनवकालत के सभी प्रयासों में सम्मिलित होती हैं।

- मुद्दे पर जानकारी एकत्रित करना– उसके प्रभाव, किसको लाभ होगा और किसको नुकसान होगा।
- विशेषज्ञों के साथ संवाद कर मुद्दे पर बौद्धिक जानकारी हासिल करें।
- कुछ वरिष्ठ व्यक्तियों का दौरा उन इलाकों में आयोजित करें जहाँ पर प्रत्याशित बदलाव आये हैं।
- साझीदारों के साथ प्रायः अनौपचारिक बैठकों का आयोजन करें।

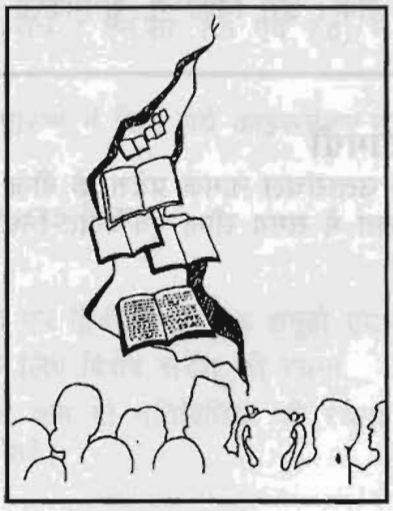

सत्र 14
जनवकालत के चरण–गतिविधियाँ, समय सीमा एवं बजट

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

जनवकालत के प्रयासों में भूमिकाओं का चयन, मुख्य संदेशों की रचना और गतिविधियों के चयन पर कुछ व्यवहारिक अनुभव प्रदान करना

सत्र के विशेष उद्देश्य

- परिस्थिति के आधार पर, जनवकालत को प्रारम्भ करने में व्यक्तियों की विभिन्न भूमिकाओं का चयन
- परिस्थिति के आधार पर, मुख्य संदेशो एवं गतिविधियों का चयन

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 14.1 समूह नृत्य	10	(10)
गतिविधि 14.2 भूमिकाओं, संदेशों एवं गतिविधियों के चयन के लिए समूह कार्य	45	(45)
गतिविधि 14.3 प्रस्तुति एवं चर्चा	35	(90)

अग्रिम तैयारी

- यह सत्र एक व्यवहारिक अभ्यास है एवं इसमें, पूर्व में, छोटे समूहों में प्रस्तुत की गयी जनवकालत की युक्तियों पर चर्चा की गयी है। इस सत्र के लिए कोई विशेष तैयारी की जरूरत नहीं है। बस आपको उन सहभागियों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, जो कि, सम्पूर्ण समूह चर्चाओं में भाग नही ले रहे हैं।
- यह सत्र सहभागियों को प्रोत्साहित करता है कि वे विचारधाराओं और वास्तविक स्थितियों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सकें। इस दिशा में, सुगमकर्ता को छोटे समूहों में सहभागियों की सहायता करनी चाहिए।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 14.1 भारत के उत्तरांचल नामक प्रदेश के बीज बचाओ आन्दोलन पर केस स्टडी
संसाधन सामग्री 14.2 जनवकालत में समय सीमा एवं बजट निर्धारित करने के लिए कुछ युक्तियाँ

अन्य सामग्री

सुगमकर्ताओं के लिए सुझाव–14

गतिविधि 14.1 *आइसब्रेकर*– समूह नृत्य

समय : 10 मिनट

एक *ट्रेनिंग ऐनौलोजी* के द्वारा इस सत्र को प्रारम्भ करें इससे सहभागियों को दोहरा लाभ होगा। एक तरफ वह उत्साहित होंगे और दूसरी तरफ आगामी चर्चा अन्य सत्रों में की गयी चर्चा की अपेक्षा और अधिक रोचक हो जायेगी। इसलिए, इस भाग के प्रशिक्षण के लिए एक साधारण *आइसब्रेकर* की योजना बनायी गयी है, जिसका प्रयोग *ट्रेनिंग ऐनालौजी* के रूप में किया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि आप हमेशा इसी *आइसब्रेकर* को अपनायें। सुगमकर्ता बाद में अपने लिए एक अलग *ऐनालौजी* का चयन भी कर सकते हैं।

- सत्र के प्रारम्भ में सहभागियों को आकस्मिक ढंग से दो समूहों में विभाजित करें। हर समूह को एक समूह नृत्य तैयार करने को कहें। उनको बतायें कि यह एक प्रतियोगिता है तथा जीतने वाली टीम को एक अच्छा पुरस्कार दिया जायेगा। उनको तैयारी के लिए पांच मिनट का समय दें।
- उनसे कहें कि वह अपना नृत्य प्रशिक्षण स्थल पर प्रस्तुत करें। हर समूह को अपना नृत्य प्रस्तुत करने के लिए 2 मिनट का समय दें। वे विभिन्न प्रकार के वाद्य–यंत्रों का प्रयोग कर सकते हैं जिनको प्रशिक्षण स्थल पर उपलब्ध कराया जा सकता है।
- नृत्यों की समाप्ति के बाद सहभागियों से पूछें कि, "आपने प्रतियोगिता के लिए विभिन्न भूमिकाओं का चयन कैसे किया? किस आधार पर नर्तकों, गायको और संगीतकारों का चयन किया गया?"
- कुछ सहभागियों के विचार सुनने के बाद बतायें कि जनवकालत में भी भूमिकाओं, संदेशों एवं गतिविधियों का चयन परिस्थिति, व्यक्ति–विशेष, उनके विशेष ज्ञान एवं उनकी रूचि पर निर्भर करता है। अन्त में उनको बतायें कि इसी प्रकार का एक अन्य अभ्यास भी होने जा रहा है।

गतिविधि 14.2 गतिविधियों, समय सीमा एवं बजट पर समूह कार्य

समय : 45 मिनट

- सहभागियों को आकस्मिक ढंग से 4 छोटे समूहों में विभाजित करें। उनको चूरीया एवं सी.एच. टी के दो केस, जिनकी चर्चा सत्र 7 (सं.सा. 7.5 एवं 7.6) में की गयी है, के बारे में याद करायें।
- इस समूह अभ्यास को सत्र के प्रारम्भ में किये गये *आइसब्रेकर* से जोड़ें। समूह कार्य का विवरण निम्नलिखित है :
  - समूह चर्चा के लिए समय : 45 मिनट
  - समूह कार्य :
    - जनवकालत में प्राथमिक एवं द्वितीयतक लक्ष्य समूहों एवं व्यक्तियों की पहचान
    - प्राथमिक लक्ष्य समूह के लिए विशेष संदेश की रचना
    - जनवकालत की कम से कम दो गतिविधियों की रचना करें जिनके लिए समय सीमा एवं बजट भी निर्धारित करें।

– बड़े कागज पर प्रस्तुति करने के लिए सामग्री तैयार करें– समूह कार्य का ढांचा निम्न प्रकार से होगा। समूह कार्य को स्पष्ट रूप से समझने के बाद इस प्रारूप को सहभागियों में बांटें।

चयनित नीतिगत मुद्दा : जनवकालत की शैली : लक्षित श्रोतागण (प्राथमिक) :		
जनवकालत की गतिविधियाँ	समय सीमा	अनुमानित बजट

- सभी सुगमकर्ताओं को संगठित कर उन्हें इस समूह कार्य के लिए कम से कम एक सुगमकर्ता को प्रत्येक समूह के पास सहायता के लिए भेजें क्योंकि हो सकता है कि इस समूह चर्चा में कुछ व्यग्रता हो। साथ ही यह भी याद रखें कि इस समूह चर्चा से कई चीजें पहचानी जायेंगी।

गतिविधि 14.3 प्रस्तुतिकरण एवं चर्चा

समय : 35 मिनट

- समूह के किसी एक सदस्य को संक्षिप्त में अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत करने को कहें। उन्हें प्रस्तुति की व्याख्या करने में अधिक समय न लगाने को कहें। वह केवल वही पढ़ सकते हैं जो उन्होंने कागज पर लिखा है।
- जो सभी समूह प्रस्तुति कर चुके हों तो आप भूमिकाओं, संदेशों एवं गतिविधियों पर प्रस्तुत बिंदुओं के आधार पर एक चर्चा की शुरूआत करें। चर्चा की शुरूआत निम्नलखित प्रश्नों से करें:
  - क्या विभिन्न व्यक्तियों की भूमिकाओं को पहचानना आसान है?
  - किस स्थिति के अनुसार संदेशों की रचना करते समय आपको कैसा लगता है?
- अगर आप कुछ विचार बिन्दुओं से सहमत नहीं हैं तो प्रश्न कर सकते हैं। आपके प्रश्न समूह चर्चा को प्रारम्भ करने में सहायक होंगे।
- अन्ततः, सत्र का समापन यह बता कर करें कि अब हम जनवकालत के व्यवहारिक पहलुओं की ओर बढ़ रहे हैं। आप निम्न बिन्दुओं पर भी प्रकाश डाल सकते हैं:
  - भूमिकाओं का निर्धारण एवं गतिविधियों का नियोजन दोनों ही नियोजन के तरीके हैं। इनमें प्रदर्शन के आधार पर बाद में बदलाव भी लाया जा सकता है। हालांकि, योजना तो आपको प्रारम्भ में ही बनानी होगी।
  - विभिन्न लक्षित समूहों के लिए संदेशों का निर्माण जनवकालत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि आप एक स्पष्ट एवं विशेष संदेश के बिना एक मंत्री के पास जाते हैं तो यह आपके मिशन के लिए सहायक नहीं होगा।

सत्र के लिए संसाधन सामग्री–14

14.1 भारत के उत्तरांचल प्रदेश में चल रहे बीज बचाओ आन्दोलन पर केस स्टडी

बीज बचाओ आन्दोलन चिपको आन्दोलन का एक सकारात्मक परिणाम है। इस आन्दोलन की शुरूआत चिपको के सफलतापूर्ण समाप्त होने के बाद हुई। जब आन्दोलनकारी अपने–अपने गांव लौट कर अपनी पैतृक आजीविका (खेती) के साथ–साथ सामाजिक बदलाव की दिशा में कार्यरत थे। इस समय हरित क्रान्ति भी अपने चरम पर थी। किंतु हरित क्रान्ति की तकनीकों को मैदानी इलाकों के लिए बनाया गया था, जहां पर पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है, न कि पर्वतीय क्षेत्रों के लिए जहां सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भरता है। असल में, हरित क्रान्ति का कृषि से कोई सम्बन्ध नहीं था क्योंकि यह तो एक बाजार की धारणा थी। इससे उम्मीदें बहुत थी मगर इसने बहुत कम फायदा किया और कई मायनों में तो नुकसान भी किया।

समय के साथ, यह ज्ञात हुआ कि रासायनिक खाद और कीटनाशकों के उपयोग से मिट्टी, पानी और मनुष्यों एवं मवेशियों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहे थे परन्तु इस बारे में कुछ नहीं किया जा रहा था। पर्वतीय क्षेत्रों में, कुछ लोगों के प्रयासों के फलस्वरूप रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के प्रयोग पर अंकुश लगा। हालांकि, इसके परिणामस्वरूप पैदावार कम हो गई क्योकि हरित क्रान्ति के अन्तर्गत दिये जाने वाले *हाइब्रीड* बीज रासायनों के बिना उपयोगी नहीं थे। इसलिए रासायनिक खाद का प्रयोग बन्द करने के पश्चात इन किसानों–सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह ज्ञात हुआ कि उनको *हाइब्रीड* बीजों का भी प्रयोग बन्द कर पारम्परिक श्रेणी के बीजों का इस्तेमाल करना होगा। यह निर्णय लेने के पश्चात उन्होंने यह पाया कि हरित क्रान्ति के दो दशकों के दौरान स्थानीय बीजों की श्रेणी नष्ट हो गयी थी। यह बीज बचाओ आन्दोलन की शुरूआत थी।

दो बीज से प्रारम्भ हुए इस आन्दोलन में, ग्राम आधारित संरक्षण के तहत, आज 300 से ज्यादा धान की किस्में और 180 से अधिक राजमा की किस्में इकटठी की जा चुकी हैं। यह आन्दोलन इस दृढ़ विश्वास पर आधारित है कि स्थानीय बीजों की विभिन्न किस्मों और परंपरागत कृषि के सिद्धान्तों के द्वारा ही लोगों को पयाप्त मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध कराये जा सकते हैं और साथ ही मनुष्य, जानवर, पेड़ पौधे, पानी, हवा तथा धरती के बीच एक प्रभावी सन्तुलन कायम रखा जा सकता है। इस प्रकार, करीब डेढ़ दशकों से ज्यादा समय से परंपरागत बीज जीवन एवं खुशहाली के प्रतीक है। आज, एक छोटे स्तर के कृषकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के समूह से ज्यादा, बीज बचाओ आन्दोलन परम्परागत ज्ञान और बुद्धि को मान्यता देने वाली एक विचारधारा बन चुकी है। इसका प्रयास है कि प्राकृतिक संसाधनों पर किसानों को अधिकार दिलाना एवं नीति सम्बन्धी निर्णयों में उनकी सीधी भागीदारी सुनिश्चित करना। यह आन्दोलन, उन किसानों के लिए वैज्ञानिक के दर्जे की भी मांग करता है जिन्होंने कृषि के विभिन्न पहलुओं पर परीक्षण कर उन्हें सुधारा है। बीज बचाओ आन्दोलन से जुड़े किसानों एवं कार्यकर्ताओं ने चिपको आन्दोलन से प्राप्त अनुभवों का लाभ उठाया और अपने संदेश को लोगों तक पहुंचाने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग किया।

चर्चा के लिए सवाल

- सफलता की इस कहानी को ज्याद से ज्यादा लोगों को बताने के लिए किस व्यक्ति को क्या भूमिका अदा करनी होगी?

- जनवकालत के प्राथमिक अथवा द्वितीयतक लक्षित समूह या व्यक्ति कौन होंगे?
- प्राथमिक लक्षित समूहों के लिए क्या संदेश होंगे?
- क्या हम जनवकालत के लिए कुछ गतिविधियों का चयन कर सकते हैं? यह गतिविधियाँ क्या हो सकती हैं?

14.2 जनवकालत के लिए समय सीमा तथा बजट निंधारित करने की युक्तियाँ

समय सीमा का निंधारण

जनवकालत की रणनीति के नियोजन के बारे में पिछले सत्र में करीब–करीब पूरी जानकारी दे दी गयी है। जिस प्रकार किसी भी गतिविधि की योजना बनाने के लिए समय सीमा निंधारित करने की आवश्यकता होती है, वैसे ही जनवकालत की योजना में भी समय सीमा निंधारित करने की जरूरत होती है। किंतु, जनवकालत की योजना अन्य कार्यक्रमों की योजना की अपेक्षा अधिक लचीली होनी चाहिए क्योंकि जनवकालत के कुछ पहलू जनवकालतकर्ता के नियंत्रण में नहीं होते। उदाहरण के लिए, राजनीतिक बदलाव के कारण जनवकालत के लक्षित श्रोता भी बदल जाते हैं। ऐसे में, जनवकालतकर्ताओं को समय सीमा के साथ–साथ अपनी रणनीतियों में भी बदलाव लाने की जरूरत होगी।

इसी प्रकार, कई बार अप्रत्याशित रूप से लक्षित श्रोताओं पर प्रभाव डालने के अवसर भी मिल जाते हैं। जनवकालतकर्ताओं को ऐसे मौकों का फायदा उठाना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि, नीति में जिस बदलाव की अपेक्षा पाँच साल बाद की जा रही थी, वह एक ही साल में प्राप्त हो जाये। या फिर, जब लक्षित श्रोता बदल जाते हैं तो हो सकता है कि अप्रत्याशित रूप से विरोध हों और जनवकालत की सम्पूर्ण प्रक्रिया की दोबारा शुरूआत करनी पड़े।

इस संदर्भ में, निम्न बिंदु बहुत महत्वपर्ण हैं।

- नीति सम्बन्धी वातावरण जनवकालत करने वाले समूह के नियंत्रण में नहीं होता। यह कभी भी बदल सकता है। इसलिए, लचीलापन बहुत महत्वपूर्ण है।
- जनवकालत के प्रयासों के दौरान नीति निंधारकों पर प्रभाव डालने के अप्रत्याशित किंतु महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आप इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार रहें।
- अप्रत्याशित घटनाक्रमों के कारण जनवकालत में नयी गतिविधियों की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसे घटनाक्रमों के लिए कुछ अतिरिक्त संसाधन रखें।
- अगर आप अपना मिशन नियोजित समय से पहले पूरा कर पाते हैं तो आप और भी कामयाब माने जायेंगे। इसलिए, आपकी योजना चाहे रूढ़िवादी हो किंतु आपकी सोच नवीन होनी चाहिए।

बजट बनाना

आमतौर पर जनवकालत की परियोजनाओं के बजट भी बनाये जाते हैं। किंतु, जनवकालत के लिए बजट बनाना एक मुश्किल कार्य है क्योंकि समय–समय पर आपको कार्यक्रम में नई गतिविधियों को शामिल करने के लिए अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। यही जनवकालत के बजट और अन्य विकास कार्यक्रमों के बजट के बीच मुख्य अन्तर है।

यदि आपके लक्षित श्रोता पीड़ित समुदायों से मिलने को इच्छुक हैं, तो आपको उन्हें वहाँ ले कर जाना चाहिए। यह उनको सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का एक सुअवसर हो सकता है। हालांकि, ऐसी गतिविधि की योजना एवं बजट आप पहले से नहीं बना सकते।

फिर भी, बजट बनाते समय निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत लागत का अनुमान लगायें :

- कर्मचारियों पर खर्चा, आपूर्ति, शुल्क, कार्यालय के लिए जगह, कार्यालय के लिए उपकरण, यातायात, इत्यादि।
- जनवकालत की गतिविधियाँ – बैठक, गोष्ठी, धरना, नुक्कड़–नाटक, इत्यादि।
- जनवकालत के लिए क्षमता वृद्धि– आन्तरिक एवं बाहरी क्षमता वृद्धि
- परामर्श सेवायें– शोध और अन्य।

सत्र 15
जनवकालत के चरण– अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

जनवकालत के प्रयासों के अनुश्रवण की धारणात्मक युक्तियों से परिचत होना

सत्र के विशेष उद्देश्य

- जनवकालत को नियोजन को एक सामान्य माध्यम के उपयुक्त बनाने के तरीकों को समझाना
- जनवकालत के प्रयासों के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन की कुछ युक्तियों को समझाना

गतिविधियाँ	समय (मिनट)	
गतिविधि 15.1 व्यवहारिक युक्तियों का प्रस्तुतिकरण	30	(30)
गतिविधि 15.2 प्रस्तुत युक्तियों पर आधारित केस स्टडी की समीक्षा	30	(60)
गतिविधि 15.3 समग्र चर्चा	30	(90)

अग्रिम तैयारी

- यह प्रशिक्षण सत्र यह जानकारी देने के लिए नहीं है कि *लॉगफ्रेम* कैसे बनाते हैं। हालांकि, एक सुगमकर्ता होने के नाते आपको नियोजन के लिए *लॉगफ्रेम* की उपयोगिता के बारे में जानकारी होनी चाहिए। इसलिए आप इस संदर्भ में कुछ साहित्य एकत्रित करके प्रदर्शित कर सकते हैं। अगर कुछ सहभागी इस संदर्भ में और जानकारी पाने को इच्छुक हों तो आप उनको प्रदर्शित साहित्य पढ़ने को कह सकते हैं।
- अगर आप *लॉगफ्रेम* के बजाय किसी अन्य नियोजन के तरीके का उपयोग करना चाहते हों तो आप वह कर सकते हैं। *लॉगफ्रेम* को केवल जनवकालत के नियोजन के लिए सीखना जरूरी नहीं है।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 15.1 अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

संसाधन सामग्री 15.2 कमियों को ढूंढने के लिए एक समस्याग्रस्त केस

अन्य सामग्री

अनुश्रवण एवं मूल्यांकन पर आधारित एक *कार्टून*

सुगमकर्ताओं के लिए सुझाव–15

गतिविधि 15.1 अनुश्रवण एवं मूल्यांकन की धारणा

समय : 30 मिनट

- इस सत्र की शुरूआत एक *कार्टून* के माध्यम से करें। एक *कार्टून* बनाकर उसके द्वारा अनुश्रवण एवं मूल्यांकन के मुख्य सिद्धान्तों को संक्षेप में समझायें। इस प्रशिक्षण में कोई विशेष *कार्टून* सम्मिलित नहीं किया गया है। सुगमकर्ता स्वयं अपने लिए *कार्टून* बना सकते हैं या विभिन्न पुस्तकों में उपलब्ध *कार्टूनों* का प्रयोग कर सकते हैं।
- *कार्टून* के माध्यम से, ही आप जनवकालत के प्रयासों के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन पर चर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं। यह मान कर चलें कि सभी सहभागी सामान्यतः अनुश्रवण एवं मूल्यांकन के सिद्धान्तों से परिचित हैं। आप इस चर्चा को सामान्य परियोजनाओं के अनुश्रवण और जनवकालत के अनुश्रवण के बीच अन्तर पर केन्द्रित करें।
- अनुश्रवण की रूपरेखा (सं.सा. 15.1) प्रस्तुत करें और सहभागियों को धारणात्मक प्रश्न पूछने दें। इस प्रस्तुतिकरण के दौरान आप जनवकालत सम्बन्धी गतिविधियों के उदाहरण दें।
- आप नियोजन के कुछ तरीकों के बारे में भी बता सकते हैं, जैसे कि *लागफ्रेम*, जिसमें अनुश्रवण और सत्यापन के संकेत सम्मिलित हैं। परन्तु, *लॉगफ्रेम* की गहराई में न जायें। अगर सहभागी *लॉगफ्रेम* के सम्बन्ध में अधिक प्रश्न पूछते हैं तो उन्हें यह स्पष्ट करें कि *लॉगफ्रेम* बनाने की प्रक्रिया को इस सत्र में समझाना मुमकिन नहीं है।

गतिविधि 15.2 केस स्टडी की समीक्षा

समय : 30 मिनट

इस सत्र के लिए आप एक समस्याग्रस्त केस की पहचान करें। यदि आप ऐसे घटनाक्रम का उल्लेख कर सकें जहां जनवकालत में कामयाबी नहीं मिल रही है क्योंकि, जनवकालत के कुछ पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है तो सत्र और अधिक ज्ञानवर्धक तथा रोचक बन जायेगा। आदर्श तो यह रहेगा कि आप अपने ही क्षेत्र से किसी वास्तविक केस का उदाहरण दें। लेकिन यदि आपको ऐसा केस नहीं मिल पाता है, तो आप एक काल्पनिक केस की रचना कर सकते हैं।

- सं.सा 15.2 में उल्लेखित केस स्टडी को सहभागियों में वितरित करें। सहभागियों को केस पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दें और इस दौरान उनको प्रशिक्षण स्थल के बाहर जाने की भी अनुमति दें। उनसे, पहले की गयी चर्चा के आधार पर व्यक्तिगत रूप से केस की समीक्षा कर उसकी कमियों को लिखने का आग्रह करें।

गतिविधि 15.3 समग्र चर्चा

समय : 30 मिनट

- सत्र के इस भाग में सहभागियों को केस के बारे में अपने विचार व्यक्त करने को कहें। आप चर्चा की शुरूआत यह पूछ कर भी कर सकते हैं कि, "केस में अनुश्रवण एवं मूल्यांकन में क्या कमियाँ थी?" वैसे केस के अन्त में भी कुछ सम्बद्ध प्रश्न पूछे गये हैं।

- एक अनौपचारिक वातावरण में खुली चर्चा करें। सहभागी बड़े *फोरम* में केवल अपने विचारों का आदान प्रदान कर रहे हैं। सहयोगियों को बारी– बारी से प्रस्तुतिकरण करने की आवश्यकता नहीं है।
- सत्र के समापन, में धन जुटाना, धन के उपयोग में पारदर्शिता और जनवकालत के अनुश्रवण पर ध्यान केन्द्रित करें। यदि आपको जनवकालत के नाम पर धन के दुरूपयोग के किसी विशिष्टि उदाहरण की जानकारी है तो उस पर प्रकाश डालें।

जनवकालत की गतिविधियों की लागत इस बात पर निर्भर करती है कि आप क्या और कैसे करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, एक प्रमुख होटल में प्रेस सम्मेलन करने में अत्यधिक व्यय आयेगा। यही प्रेस सम्मेलन किसी विद्यालय के भवन में भी आयोजित किया जा सकता है जो कि लगभग निःशुल्क उपलब्ध हो सकता है। अगर आप नीति सम्बन्धी शोध, नीति विश्लेषण, जनवकालत के संदेश की रचना, वृत्तचित्र बनाना इत्यादि, के लिए पेशेवर लोगों की सेवाएं लेते हैं तो आपकी गतिविधियों पर अधिक व्यय आ सकता है। यही गतिविधियाँ कम खर्चे में भी हो सकती है, यदि आपकी संस्था के सदस्य इसको करने की क्षमता रखते हों।

सत्र के लिए संसाधन सामग्री–15

15.1 अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

अनुश्रवण एवं मूल्यांकन की इस रूपरेखा का उपयोग सभी कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं में किया जाता है। किंतु, यह सत्र केवल जनवकालत सम्बन्धी गतिविधियों के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन पर केन्द्रित है। इस सत्र में निम्न बिन्दुओं पर जोर डाला गया है :

- अनुश्रवण एवं मूल्यांकन की इसी रूपरेखा का प्रयोग जनवकालत में भी किया जा सकता है।
- जनवकालत में अनुश्रवण एवं मूल्यांकन का उद्देश्य अन्य कार्यक्रमों की भांति ही है।
- हालांकि, जनवकालत की गतिविधियों के परिणाम भिन्न हो सकते हैं– कई बार तो यह अदृश्य होते हैं।
- जनवकालत के प्रभाव तो थोड़े समय बाद देखे जा सकते हैं किंतु परिणाम काफी समय बाद नजर आते हैं।
- जनवकालत के अनुश्रवण एवं मूल्यांकन को गुणात्मक जानकारी पर अधिक निर्भर होना चाहिए।

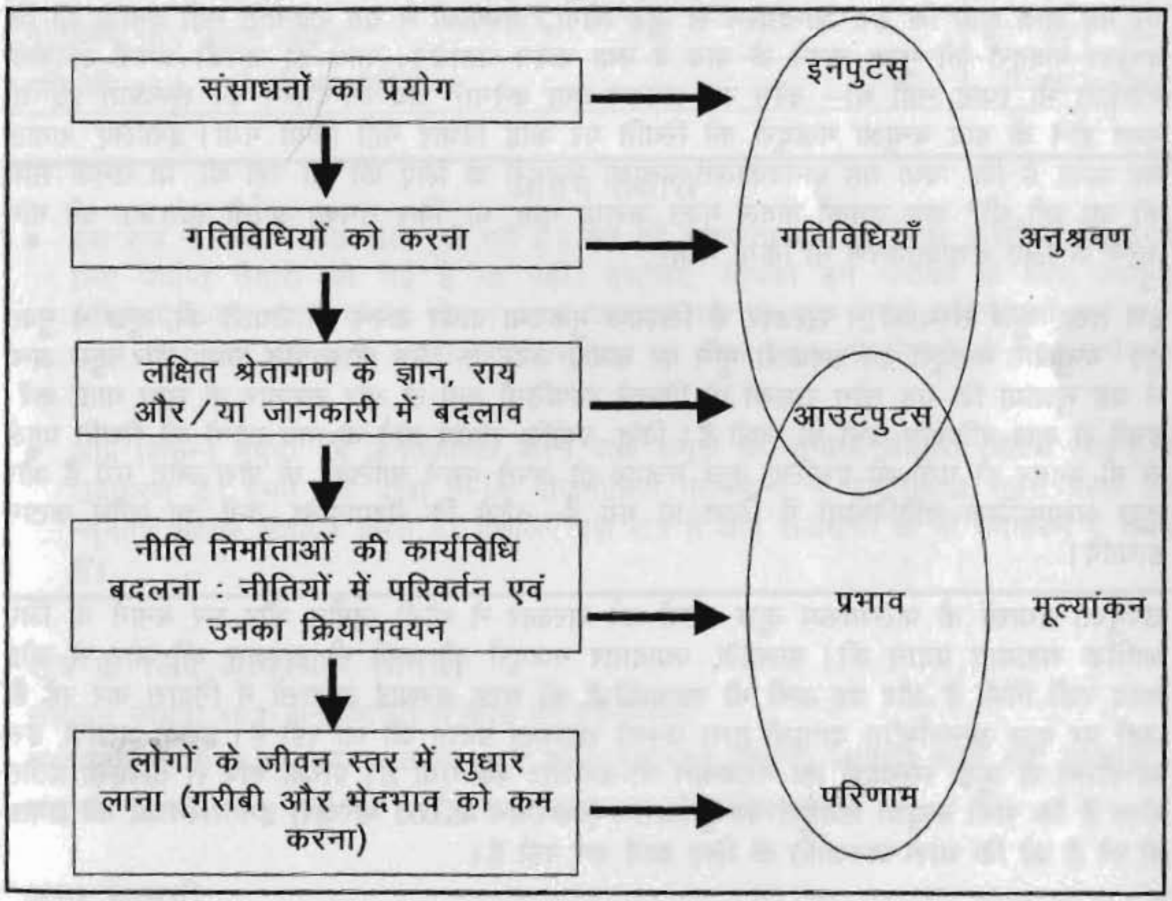

जनवकालत का मूल्यांकन

जनवकालत सम्बन्धी गतिविधियों का मूल्यांकन करते समय निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें:

- नीतिगत बदलावों का प्रभाव पारिवारिक स्तर तक बहुत समय में पहुंचता है।
- परिणामों का उत्तरदायी किसी नीतिगत बदलाव को ठहराना एक मुश्किल कार्य है।

15.2 नेपाल का बन्धुआ मजदूर आन्दोलन : एक केस स्टडी

नेपाल का बन्धुआ मजदूर आन्दोलन बहुत प्रसिद्ध है। इस आन्दोलन को एक महत्वपूर्ण सफलता तब हासिल हुई जब सरकार ने सभी बन्धुआ मजदूरों को स्वतंत्र करने की घोषणा की। हालांकि, हाल ही में मुक्त हुए बन्धुआ मजदूरों को पुर्नवासित करने के लिए आन्दोलन अभी जारी है।

इस आन्दोलन की शुरूआत एक छोटे से स्तर पर हुई और थारू जनजाति के साथ काम करने वाली कुछ संस्थाओं ने इसका प्रारम्भ किया। अधिकतर बन्धुआ मजदूर इसी जनजाति से है। जब इस आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ तो इससे जुड़ी संस्थाओं ने लक्ष्य, उद्देश्य, योजना, बजट और भूमिकाओं का स्पष्ट रूप से निर्धारण नहीं किया था। जैसे–जैसे आन्दोलन बढ़ता गया, इन पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता महसूस हुई।

भाग्यवश, आन्दोलन के समर्थन में कई संस्थाओं तथा सहयोगी दलों ने एक गठबंधन बना लिया था। परिणामस्वरूप, यह आन्दोलन इतना सफल हुआ कि उस समय की सरकार ने बन्धुआ मजदूरों को अपने "मालिकों" की गुलामी से कानूनन मुक्त करने की घोषणा की। किंतु, इस घोषणा के तुरन्त बाद जो बन्धुआ मजदूर पहले किसी समृद्ध परिवार के साथ रहकर अपना जीवन यापन करते थे वह सड़क पर आ गये। उनकी स्थिति पहले से भी बदतर हो गयी है। स्थिति की समीक्षा करने पर यह ज्ञात हुआ कि इस आन्दोलन से जुड़े लोगों/संस्थाओं ने यह रणनीति नहीं बनायी थी कि बन्धुआ मजदूरों को मुक्त करने के बाद वे क्या कदम उठायेंगे। साथ ही उनकी अपनी अंदरूनी रणनीति भी स्पष्ट नहीं थी– कौन सा संगठन क्या करेगा? जब आन्दोलन की शुरूआत हुई तो मुक्त होने के बाद बन्धुआ मजदूरों की स्थिति पर कोई विचार नहीं किया गया। इसलिए, सवाल यह आता है कि "क्या यह जनवकालत बन्धुआ मजदूरों के लिए की जा रही थी, या उनके साथ की जा रही थी? क्या उनको केवल मुक्त कराया गया, या, फिर उनका अपनी स्वंतत्रता की मांग करने के लिए सशक्तिकरण भी किया गया?"

इस तरह, कुछ संस्थाओं ने सरकार के खिलाफ मुकदमा दायर करने की तैयारी की, कुछ ने मुक्त हुए "बन्धुआ" मजदूरों को सरकारी भूमि पर कब्जा करने के लिए प्रोत्साहित किया और कुछ अन्य ने यह सुझाया कि यह लोग सड़कों के किनारे झोपड़ियाँ बना लें और सरकार के साथ वार्ता करें। इनमें से कुछ प्रक्रियाए अभी भी जारी हैं। किंतु, क्योंकि स्वतंत्र होने के बाद लोगों की स्थिति पहले से भी बदतर हो गयी थी इसलिए कुछ मजदूर तो अपने पुराने मालिकों के पास लौट गये हैं और कुछ असामाजिक गतिविधियों में लिप्त हो गये हैं– जैसे कि वैश्यावृत्ति, वनों का अवैध कटान इत्यादि।

उपर्युक्त प्रयासों के फलस्वरूप कुछ लोगों को सरकार ने थोड़ी जमीन और घर बनाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। हालांकि, ज्यादातर मजदूरों को अभी भी सरकार की ओर से कोई मदद नहीं मिली है और वह अभी भी शरणार्थियों की तरह अस्थाई आवासों में निवास कर रहे हैं, जहाँ पर कुछ अन्तर्राष्ट्रीय दाताओं द्वारा उनको सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अलावा, इस आन्दोलन से जुड़ी संस्थाओं का गठबन्धन भी कमजोर पड़ गया है। प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा प्रतीत होता है कि सभी बन्धुआ मजदूरों का पुर्नवासन (तकरीबन 45,000 परिवार) इन संस्थाओं की क्षमता से परे है जो कि थारू जनजाति के लिए कार्य कर रही हैं।

चर्चा के लिए प्रश्न :

- इस आन्दोलन के प्रभावशाली बिंदु क्या है?
- इस आन्दोलन की क्या कमियाँ रही?
- आने वाले समय में इस आन्दोलन को एक नया रूप देने के लिए आपकी क्या सलाह है?

सत्र 16
बाटम लाईन और वार्ता की रणनीतियाँ

समय : 1 घंटा 30 मिनट

सत्र का सम्पूर्ण उद्देश्य

जनवकालत के प्रयासों में वार्ता की रणनीतियों के बारे में जानकारी देना

सत्र के विशेष उद्देश्य

- जनवकालत के प्रयासों में *बाटम लाईन* (न्यूनतम आधार) के बारे में समझाना
- *बाटम लाईन* बनाते समय ध्यान देने योग्य घटकों के बारे में समझाना
- वार्ता की रणनीति ध्यान देने योग्य घटकों के बारे में समझाना

गतिविधियाँ	समय मिनट)	
गतिविधि 16.1 *बाटम लाईन*	30	(30)
गतिविधि 16.2 वार्ता की रणनीतियाँ	60	(90)

अग्रिम तैयारी

- इस सत्र में नाटक तथा खेल रखे गये हैं। सत्र की सफलता इस पर निर्भर करती है कि इनके लिए पर्याप्त तैयारी की गई है या नहीं। इसलिए, आपको इन नाटकों के लिए उपयुक्त अभिनेताओं का चयन करना होगा। अगर जरूरत पड़े तो कुछ मुख्य अभिनेताओं का चयन पहले दिन करें और उन्हें अपनी–अपनी भूमिका को ठीक प्रकार से निभाने के लिए मार्गदर्शन दें।
- आप विभिन्न मुद्दों पर जनवकालत करने वाले समूहों के न्यूनतम आधारों (*बाटम लाईन*) के उदाहरण दें। हमने यह देखा है कि राजनीतिक गठबन्धनों में राजनीतिज्ञ सबसे पहले एक न्यूनतम आधार स्थापित करते हैं। इसलिए इस सत्र में आप राजनीति के भी उदाहरण दे सकते हैं।

सत्र के लिए आवश्यक सामग्री

संसाधन सामग्री 16.1 जनवकालत में वार्ता की रणनीतियाँ

संसाधन सामग्री 16.2 जनवकालत में *बाटम लाईन* (न्यूनतम आधारों) स्थापित करने की युक्तियाँ

संसाधन सामग्री 16.3 वार्ता को दर्शाने वाले नाटक का काल्पनिक क्रम।

अन्य सामग्री

सुगमकर्ताओं के लिए सुझाव–16

गतिविधि 16.1 जनवकालत की *बाटम लाईन* (न्यूनतम आधार)

समय : 30 मिनट

जनवकालत सत्ता पक्ष और उपेक्षित वर्ग के बीच एक संघर्ष है। इस संघर्ष के हमेशा कुछ न्यूनतम आधार होते हैं मगर आमतौर पर लोग इन पर ध्यान नहीं देते हैं। यही समाज की वास्तविकता है। इसलिए, आप इन निम्नलिखित युक्तियों पर आधारित एक नाटक तैयार करें। नाटक का घटनाक्रम नीचे दिया गया है।

- इस नाटक का आधार जनवकालतकर्ताओं और स्थानीय स्तर के कुछ प्रभावशाली लोगों के बीच एक बैठक है।
- जनवकालतकर्ता इस बैठक के लिए पहले से कोई तैयरी नहीं करते हैं।
- स्थानीय स्तर के प्रभावशाली सदस्यों द्वारा जनवकालतकर्ताओं से विभिन्न प्रश्न पूछें जाते हैं मगर वह उनके उचित उत्तर नहीं दे पाते हैं।
- जनवकालतकर्ता अपने जनवकालत के मुद्दे पर पर्याप्त आत्मविश्वास नहीं दिखा पाते हैं।
- वह जनवकालत के पक्ष में पर्याप्त तर्क नहीं प्रस्तुत कर पाते हैं।

नाटक के लिए सुगमकर्ताओं को कई सहभागियों का चयन कर इस सत्र से पहले उनको तैयार करना होगा। यदि नाटक के लिए चयनित पात्र अपनी भूमिका का निर्वाहन अच्छे ढंग से करते हैं तो सहभागी इस सत्र से अधिक सीख पायेंगे। इसलिए, सुगमकर्ता को पात्रों का चयन सावधानी से करना होगा।

- नाटक जब पूरा हो जाये तो ताली बजाकर उसे रोक दें। उसके बाद चर्चा की शुरूआत करें। चर्चा प्रारम्भ करने के लिए निम्न प्रश्नों का उपयोग करें:
  - आपने नाटक में क्या देखा?
  - आपके अनुसार नाटक की सबसे प्रभावशाली बातें क्या थी?
  - नाटक में जनवकालत करने वाले समूह की क्या कमियाँ/कमजोरियाँ थी?
  - इन कमजोरियों को दूर करने के लिए क्या कदम उठाने चाहिए?
- चर्चा को इस ओर केन्द्रित करें कि जनवकालत का न्यूनतम आधार निर्धारित करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस संदर्भ में सहभागियों के मुख्य विचारों को नोट करें।
- संक्षेप में चर्चा के मुख्य तथ्यों को व्यक्त करें और फिर सं.सा. 16.1 में दिये गये न्यूनतम आधार निर्धारित करने के तरीकों को प्रस्तुत करें।

गतिविधि 16.2 जनवकालत में वार्ता की रणनीतियाँ

समय : 1 घंटा

- सत्र के इस भाग का प्रारम्भ सं.सा. 16.2 में दी गयी वार्ता की रणनीतियों के प्रस्तुतिकरण से करें। प्रस्तुति के समर्थन में कुछ व्यवहारिक उदाहरण देने की कोशिश करें।

- प्रस्तुतिकरण के बाद, सहभागियों को एक खेल खेलने को कहें। खेल की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होगी :
  - 2 टीम बनायें, प्रत्येक टीम में 6 सहभागी होने चाहिए। इन 6 सहभागियों में से 3 जनवकालतकर्ता होंगे तथा 3 सरकार के प्रतिनिधि होंगे। यह सभी वार्ता के लिए आमने सामने बैठे होंगे।
  - हर टीम के जनवकालतकर्ताओं एवं सरकारी प्रतिनिधियों को वार्ता की अलग–अलग शर्तें दें। दोनों को न्यूनतम शर्तें भी दें।
  - उनको वार्ता के लिए अपनी–अपनी रणनीति बनाने को कहें।
  - कक्ष के मध्य में एक मेज और कुर्सियाँ रख दें और दोनों पक्षों को आमने–सामने बैठकर वार्ता करने को कहें। चर्चा की शुरूआत किस प्रकार होती है और दोनों पक्षों के बीच समझौता कैसे हो पाता है यह देखना बहुत महत्वपूर्ण है। सभी सहभागियों को ध्यान से देखने को कहें।
- इस खेल का घटनाक्रम सं.सा. 16.4 में दिया गया है। हालांकि, आप चाहें तो अन्य प्रशिक्षण कार्यशालाओं के लिए अलग घटनाक्रम भी बना सकते हैं।
- सत्र के अंत में निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डालें :
  - वार्ता जनवकालत का आखिरी किंतु सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। अंत में जनवकालत की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वार्ता कितनी कुशलता से की जाती है। इसलिए यह एक चुनौतिपूर्ण कार्य है।
  - वार्ता की सफलता व्यक्ति–विशेष के बातचीत करने के ढंग पर भी निर्भर करती है इसलिए इसमें भाग ले रहे व्यक्तियों को बातचीत करने में कुशल होना चाहिए।
  - औपचारिक बैठक एवं वार्ता के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कृपया नोट करें

जनवकालत के संदर्भ में *'बाटम लाईन* का अर्थ एक ऐसी शर्त या मांग है जो कि इस पूरे प्रयास से आपकी न्यूनतम अपेक्षा है। उदाहरण के रूप में सरकार 40% कर लगा रही है और सामुदायिक वन पर निर्भर लोग यह मांग कर रहे हैं कि सरकार एक नया कानून बनाकर उन सबको कर–मुक्त करे। इस स्थिति में हो सकता है कि आपकी निम्नतम उपेक्षा कर–मुक्त होना न हो, अपितु यदि सरकार कर की दरों को 40% से घटाकर 20% भी कर देती है तो आप सन्तुष्ट हो जायेंगे। इसलिए इस स्थिति में 20% आपकी *"बाटम लाईन"* है।

सत्र के लिए संसाधन सामग्री–16

16.1 *बाटम लाईन* का निर्धारण करने की युक्तियाँ

बाटम लाईन की रणनीति

किसी भी संघर्ष में *बाटम लाईन* की रणनीतियाँ होती हैं। यह बात जनवकालत पर भी लागू होती है। *बाटम लाईन* की रणनीति यह निर्धारित करती है कि जनवकालत करने वाले समूह की निम्नतम अपेक्षा क्या है। यह सभी मुद्दों के लिए समान नहीं होती। वैसे तो किसी भी मुद्दे पर जनवकालत करते समय जीती गई लड़ाइयों के आधार पर ही वास्तविक *बाटम लाईन* का निर्धारण होता है। किंतु नयोजन करते समय एक आरम्भिक *बाटम लाईन* निर्धारित करनी चाहिए। ऐसा करते समय निम्न जानकारी सहायक होगी। नीतिगत मुद्दे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के अधिकारों को चुनौती देते हैं और सरकार कभी भी आपके या आपकी संस्था के खिलाफ कोई आदेश दे सकती है। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे।

- जनवकालत के किसी भी प्रयास में अन्तिम विरोधी तो "सरकारी तंत्र" ही होता है। यह तंत्र आपका और आपकी संस्था का मनोबल कम करने के लिए कोई भी तरीका अपना सकता है।
- सरकारी ताकतें आपके कर्मचारियों पर बेकार के इल्जाम लगाकर गिरफ्तार कर सकती है।
- कुछ विरोधी तो आपके कर्मचारियों का अपहरण भी कर सकते हैं।
- आपके ऊपर अपनी संस्था के कुछ कर्मचारियों को निकालने के लिए दबाव भी डाला जा सकता है।
- आपके विरोधी 'बांटो और शासन करो' की रणनीति अपनायेंगे।
- आपके कुछ मित्र 'खरीदे' भी जा सकते हैं।
- जनवकालत की शक्ति का मुख्य स्रोत नागर समाज होता है– यानि कि आपके कितने समर्थक हैं। क्या आपने समीक्षा की है कि कितने लोग सक्रिय रूप से आपके साथ हैं? हो सकता है कि उनको आपके विरोधियों ने पहले ही अपने पक्ष में कर लिया हो।

16.2 जनवकालत में वार्ता की रणनीतियाँ

वार्ता एक तरह का समझौता है, जो कि तब किया जाता है जब कि दोनों या सभी पक्षों की *बाटम लाईन* मेल खाती हो। जनवकालत में इसे खेल को जीतने के दावपेंच कहते हैं जिसमें कि, आप अपनी कोई भी कीमती चीज नहीं खोते हैं और सिर्फ वही देते हैं जो जरूरी नहीं है। इन दांवपेंचों का सावधानी से प्रयोग करें। वार्ता की तैयारी करते समय आप निम्न प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर खोज लें।

- आप आखिर क्या चाहते हैं?
- दूसरे दल क्या चाहते हैं?
- आप क्या करेंगे अगर दूसरे पक्ष ने 'न' कह दिया?
- आपके लिए जो जरूरी है उसको पाने के लिए बदले में आप क्या देने के लिए तैयार हैं?

- दूसरे पक्ष की क्या कमजोरियां हैं या वह क्षेत्र जिन पर आप दबाव डाल सकते हैं (उदाहरण के तौर पर जन छवि)?

वार्ता की तैयारी

आमतौर पर, वार्ता परिस्थितियों पर आधारित होती है। आपके प्रयासों के द्वारा उत्पन्न स्थिति पर निर्भर करता है कि क्या और कब वार्ता करें। हालांकि, निम्न जानकारी मददगार हो सकती है :

- बैठक का एजेण्डा और रणनीति बनायें। तथ्यों की पहचान मुद्दों के आधार पर करें न कि सिद्धान्तों के आधार पर।
- वार्ता से पहले अपने श्रेष्ठ और सबसे बुरे विकल्पों की पहचान करें– यह आपकी *बाटम लाईन* है।
- ऐसे हल ढूंढने की कोशिश करें जिनसे सभी के लिए जीत की स्थिति उत्पन्न हो सके (*विन–विन सिचुएशन*)
- अपने तर्क को मजबूती प्रदान करने के लिए आवश्यक जानकारी एकत्र करें।
- सहज भाषा का प्रयोग करें, बहुत सारे प्रश्न पूछें और फिर उनके जवाब ध्यान से सुनें।
- असहमति जताने से पहले अपनी बात सही ढंग से समझायें, धैर्य रखें और चाहे आप समझौते पर आने में नाकाम रहें तब भी सम्बन्ध खराब न करें। इस तरह से आप दोबारा भी वार्ता कर सकते है।

16.3 वार्ता पर आधारित नाटक का परिपेक्ष

यह नाटक किसी भी ऐसी स्थिति पर आधारित हो सकता है जो कि स्थानीय परिपेक्ष में हो। मगर, ज्यादातर सहभागियों को मुद्दे की तथा मुद्दे से जुड़े संघर्ष की जानकारी होनी चाहिए। यहां पर प्रस्तुत परिपेक्ष क्षेत्रीय स्तर के प्रशिक्षण के लिए तैयार किया गया है।

टीम 1
केस कम्युनिटी फौरेस्ट यूसर ग्रुप की आय पर 40% कर

- पीड़ित जनता की तरफ से वार्ता करने वाले लोगों के लिए *बाटम लाईन* : कर 10% से अधिक नहीं होना चाहिए और वह भी केवल उस लकड़ी पर जो कि *यूजर ग्रुप* के सदस्यों के अलावा किसी बाहर वाले को बेची जा रही हो।
- वार्ता करने वाले सरकारी प्रतिनिधियों के लिए *बाटम लाईन* : कर की दर 10% से कम नहीं होनी चाहिए तथा यह *यूजर ग्रुप* की सभी प्रकार की आय पर होनी चाहिए।

बाटम लाईन की इन रणनीतियों के आधार पर प्रशिक्षण स्थल में चर्चा होगी। हालांकि, किसी भी दल को अपने विरोधी की *बाटम लाईन* की जानकारी नहीं होनी चाहिए। किंतु, निर्देश देने वाले के रूप में आप समझ सकते हैं कि दोनों समूहों की *बाटम लाईन* मेल नहीं खाती है, इसलिए इस स्थिति में समझौता होना मुश्किल नहीं है। किंतु फिर भी, सुगमकर्ताओं (और अन्य सहभागियों) को चर्चा को ध्यान से देखना चाहिये। दोनों दलों के तर्क तथा तर्कों के समर्थन में प्रस्तुत तथ्यों पर गौर करना चाहिए। यह भी ध्यान देने योग्य है कि समझौता न होने के बावजूद भी क्या उन्होंने

एक दूसरे के बीच ऐसे सम्बन्ध बनाये रखें कि वह दोबारा *बाटग लाईन* बनाकर उन पर चर्चा कर सकें।

टीम 2

केसः वन गूजरों के लिए मतदान का अधिकार

- वन गूजरों का प्रतिनिधित्व कर रहे दल के लिये शर्तें : सभी वन गूजरों (एक घुमन्तु जनजाति) को जल्दी से जल्दी अन्य नागरिकों की तरह मतदान का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। किंतु, स्थिति के आधार पर, वार्ता करने वाले अपने विवेक के अुनसार यह तय करें कि यह अधिकार कब मिलने चाहिए।
- सरकारी प्रतिनिधियों के लिए वार्ता की शर्तें : मतदान के अधिकार उन्हीं को देने चाहिए जो लोग एक जगह पर स्थाई रूप से निवास कर रहे हैं। मगर, इस टीम को इस मुद्दे पर समझौता करने के लिए निर्णय लेने की थोड़ी छूट हैं।

टीम 3

अगर आपके पास पर्याप्त समय है तो आप तीसरी टीम का भी गठन कर उनको एक और केस दे सकते हैं।

दोनों समूहों की शर्तों के मुताबिक समझौता भी संभव है। किंतु यह दोनों समूहों की संचालक शक्ति पर निर्भर करता है। अगर समूह वार्ता को आगे बढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं जो यह इस बात का सूचक है कि या तो बैठक के लिए ठीक ढंग से तैयारी नहीं की गयी या फिर वार्ता के कौशल की कमी है, इत्यादि। इस नाटक के बाद की जाने वाली चर्चा में इन कर्मियों का विश्लेषण करें।